प्रश्न : स्वप्नानुभव किसे कहते हैं?

उत्तर : जब व्यक्ति विशेष भगवान कल्कि की आराधना करना आरंभ करता है तो सोते हुए स्वप्न में कुछ दिखाई देता है अथवा कोई वाणी सुनाई देती है और वह सो कर उठने के बाद भी उसे पूरी तरह से याद रहती है। इन स्वप्नों अथवा वाणी में उस व्यक्ति के जीवन में आने वाला उत्थान अथवा परेशानियों से निकलने के लिए मार्ग दर्शन छुपा होता है। कई बार भक्त की जाग्रत आँखों के आगे से कोई घटनाक्रम साकार रूप में एक झलक की तरह दिख कर अदृश्य हो जाता है। इन्हें कल्कि भक्त स्वप्न, वाणी एवं जाग्रत अनुभव कहते हैं।

प्रश्न : अनुभव बनते कैसे हैं? इन्हें देता कौन है एवं याद क्यों रहते हैं?

उत्तर : संपूर्ण ब्रह्मांड का संचालन करने वाली ब्रह्म शक्ति वास्तव में निराकार है जो दूसरे शब्दों में विशाल सूर्य की तरह एक चमचमाता ज्योति पुंज है। जब इस कलियुग के युगावतार भगवान श्री कल्कि (विशाल ज्योति पुंज) से भक्त की भक्ति जुड़ती है, तो वह निराकार ब्रह्म भगवान श्री कल्कि जी के निर्देश हमें संकेत के रूप में दिखाते हैं। भगवान विष्णु के पहले नौ अवतार इस बात के प्रमाण हैं। महाविष्णु के इस कलियुग के अवतार प्रभु श्री कल्कि हैं। उनका अवतार हो चुका है, प्रकट होना शेष है। जो भी भक्त उनका नाम जाप, हवन, पाठ और प्रचार का कार्य (सत्संग व साहित्य द्वारा) करता है, उसे भाग्य में लिखे हर दुख व परेशानी से बचाने व धन, सम्पन्नता, वैभवता दिलवाने के लिए, कल्कि भगवान उस भक्त को अपनी अनुभव लीला (स्वप्न, जाग्रत, वाणी अनुभव) द्वारा दिखाकर बताकर रास्ता देते हैं। भक्त अनुभव लीला द्वारा बताए गए निर्देशों का पालन करके पिछले जन्मों के पापकर्मों का भुगतान कर सुख-समृद्धि प्राप्त कर सके, इसलिए ये अनुभव याद रहते हैं। अत: सरल भक्त याद बने रहने और उनका अर्थ जानने व उपचार करने के लिये उसी दिन तुरंत कॉपी/रजिस्टर में लिख लेते हैं।

प्रश्न : अनुभव शरीर में कहाँ पर आता है?

उत्तर : स्त्रियाँ जहाँ बिंदी लगाती हैं, उस जगह हर व्यक्ति का तीसरा नेत्र होता है, जो सुप्तावस्था में होता है। जब व्यक्ति युग के अवतार के प्रति भक्ति भाव से जुड़ता है तो उस त्रिनेत्र का तेज जाग्रत होने लगता है। जैस-जैसे भक्त की भक्ति बढ़ती है, वैसे-वैसे उसके तीसरे नेत्र का तेज बढ़ता है और उस तेज से पूर्ण ब्रह्म नारायण के साथ ज्योति पुंज से संबंध जुड़ने लगता है। उस ज्योति पुंज के द्वारा प्रभु स्पष्ट-अस्पष्ट अनुभव तो देते ही हैं, कभी-कभी उसी में उपचार भी देते हैं। तब प्रभु द्वारा भेजा गया संदेश स्पष्ट होने लगता है।

प्रश्न : अनुभव में जो दिखता है, वह कई बार बहुत स्प्ष्ट व अस्पष्ट होता है। अनुभव का अर्थ बताने वाले पैनल सदस्य जो अनुभव का अर्थ बताते हैं, वह द्रष्टा का मानस एकदम स्वीकार नहीं कर पाता है। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर : श्री गुरुजी ने कई बार बताया, अनुभव रेत मिली बूरा होती है। भगवान कल्कि भक्त के कल्याण के लिए स्वयं अथवा दैवी शक्तियों द्वारा संदेश भिजवाते हैं, ताकि कलियुग की आसुरी

शक्तियाँ उसमें विघ्न न डालें। इसलिए स्वप्नानुभव कई बार कोड वर्ड में भी होते हैं। (यदि हमें रेत मिली बूरा में से रेत और बूरा को अलग करना है तो उसमें पानी मिला कर कपड़े से छानना पड़ेगा)

अत: पैनल सदस्य अनुभवों का जो अर्थ बताते हैं, उसमें उनकी अपनी मरजी या विचार नहीं होते हैं। भगवान के दिखाए गए अंतर्जगत से पहले जटिल समस्याओं में से निकालने के लिये (स्वप्न जागृत वाणी) लिखित अनुभवों के आधार पर अथवा अब के आधार पर जो अर्थ उनके मानस में शक्तियाँ देती हैं, वही बताया जाता है।

कल्कि भगवान ने यह बात कई बार अनुभवों द्वारा भी स्पष्ट की है कि जब भक्त अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए अनुभवों का गलत अर्थ बताएंगे और लगाएंगे, तो स्वप्न द्रष्टा तो गिरेगा ही, गलत अर्थ बताने वाला भी गिरेगा अर्थात् कालांतर में वह शक्तिहीन हो जाएगा। आप भी ऐसे कई सदस्यों को जानते होंगे। ऐसे पचासों उदाहरण हमारे पास हैं जिसमें जब अनुभव पैनल ने किसी भक्त के अनुभव का अर्थ उसकी मर्जी के विपरीत बताया तो स्वप्नद्रष्टा ने अपने जनों से नाराजगी जताई, उस अर्थ को गलत माना। बाद में बताई गई परेशानी आने पर या दोबारा उसके अथवा उसके परिवार वालों के स्वप्नानुभवों में भगवान श्री कल्कि ने उसी अर्थ की पुष्टि की। पैनल मैंबर द्वारा बताया गया अर्थ सही था।

आज श्री कल्कि बाल वाटिका कल्कि जी द्वारा स्वपनानुभवों में दिए गए निर्देशों का अपनी मरजी थोपे बिना ईमानदारी से पालन कर रही है। तभी एक के बाद एक अनेकों विशिष्ट कार्य भगवान श्री कल्कि जी के पूर्ण हो रहे हैं। महाविष्णु का पहला चमत्कारी अवतार भगवान श्री कल्कि, जिनकी प्रकट होने से पहले मूर्तियाँ लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही है। देखते ही देखते महज 17 वर्षों में कल्कि भगवान की शक्ति का बल पूरे विश्व में फैल रहा है। भगवान श्री कल्कि की मूर्तियाँ लग रही हैं व विधि-विधान से पूजा हो रही है।

प्रश्न : दृष्टा के स्वपनानुभवों का अर्थ किस आधार पर लगाया जाता है?

उत्तर : जिस समय दृष्टा का अनुभव पैनल मैंबर एकाग्रचित्त होकर पढ़ता है तो उसका संबंध अंतर्जगत से होने लगता है और उसे संदेश भी मिलने लगते हैं कि इस तरह की स्थिति किस-किस भक्त के ऊपर पहले भी आई है। रिकॉर्ड रजिस्टरों में यह दर्ज है कौन से साल में कब भगवान ने इस प्रकार की परेशानी बताई/दिखाई, हल बताया और सफलता प्रदान की। इससे पैनल मैंबर द्रष्टा को सही रास्ता दे पाते हैं। भगवान श्री कल्कि किसी का बुरा नहीं करते लेकिन उपचारों द्वारा बुरों से भक्तों का बचाव अवश्य करते हैं, तभी द्रष्टा परेशानियों से बच पाता है, उनकी भक्ति सुख-समृद्धि की ओर अग्रसर होती है।